VETERINARY TODAY

Popular Article

Lumpy Skin Disease: एक गंभीर पशु रोग का परिचय

डॉ. मृणालिनी सारण & डॉ. सुनीता

भूरी त्वचा रोग (Lumpy Skin Disease)एक विषाणु संक्रामक बीमारी है जो गायों और भैंसो में पायी जाती है। यह रोग एक वेक्टर-बोर्न रोग है, जिसका कारक संक्रमण टिकटोक्सप्लाजमा विषाणु (Capripoxvirus) होता है। यह रोग पशुओं के बीमारियों की एक प्रमुख कारण है और इससे इनका उत्पादन भी प्रभावित होता है। यह रोग अक्सर गर्मी के मौसम में प्रबल होता है, लेकिन इसका प्रकोप सालभर हो सकता है।

भूरी त्वचा रोग (Lumpy Skin Disease)के लक्षणों में उबड़-खबड़ पुट्ठों के रूप में घने गांठें होना शामिल होता है। ये गांठें गाय या भैंसो के शरीर के विभिन्न हिस्सों पर दिखाई देती हैं, जैसे कि गर्दन, गले, बच्चे, अंडकोष और रेटिनोल में। इन गांठों के साथ बुखार, कमजोरी, खांसी और आवाज में बदलाव जैसे लक्षण भी शामिल हो सकते हैं। इस रोग में बच्चों की मृत्यु दर भी बढ़ सकती है।

भूरी त्वचा रोग(Lumpy Skin Disease) का प्रसार भूरी त्वचा विषाणु से संपर्क से होता है। इसमें संक्रमित पशु द्वारा छाये जाने वाले स्नायु, उत्सर्जक, गाल और अन्य तरल बहिर्निकट संपर्क से भी प्रसारित हो सकता है। यह रोग खुराकी पशुओं द्वारा बारिश जल और अन्य साझी वस्त्रों, आवारा बैलों, मच्छरों और अन्य सांध्यिक प्रजातियों द्वारा फैला जा सकता है।

भूरी त्वचा रोग के उपचार के लिए वैज्ञानिकों द्वारा वैक्सीन विकसित की गई है, जो पशुओं को संक्रमण से सुरक्षा प्रदान करती है। अगर एक पशु में संक्रमण हुआ तो दूसरे पशु भी इससे संक्रमित हो जाते हैं। ये बीमारी, मक्खी-मच्छर, चारा के जरिए फैलती है, क्योंकि पशु भी एक राज्य से दूसरे राज्य तक आते-जाते रहते हैं, जिनसे ये बीमारी एक से दूसरे राज्य में भी फैल जाती है।

रोगी पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए, अगर पशुशाला में या नजदीक में किसी पशु में संक्रमण की जानकारी मिलती है, तो स्वस्थ पशु को हमेशा उनसे अलग रखना चाहिए। रोग के लक्षण दिखाने वाले पशुओं को नहीं खरीदना चाहिए, मेला, मंडी और प्रदर्शनी में पशुओं को नहीं ले जाना चाहिए।

पशुशाला में कीटों की संख्या पर काबू करने के उपाय करने चाहिए, मुख्यत: मच्छर, मक्खी, पिस्सू और चिंचडी का उचित प्रबंध करना चाहिए। रोगी पशुओं की जांच और इलाज में उपयोग हुए सामान को खुले में नहीं फेंकना चाहिए।

अगर अपने पशुशाला पर या आसपास किसी असाधारण लक्षण वाले पशु को देखते हैं, तो तुरंत नजदीकी पशु अस्पताल में इसकी जानकारी देनी चाहिए। एक पशुशाला के श्रमिक को दुसरे पशुशाला में नहीं जाना चाहिए, इसके साथ ही पशुपालकों को भी अपने शरीर की स्वच्छता का ध्यान रखना भी महत्वपूर्ण होता है ताकि रोग का प्रसार रोका जा सके। पशु चिकित्सा के विशेषज्ञ की सलाह और देखभाल के माध्यम से इस बीमारी का संचालन किया जा सकता है।

वैसे तो अभी तक लंपी स्किन डिजीज से ग्रस्त पशुओं से इंसानों में बीमारी फैलने का कोई मामला सामने नहीं आया है, लेकिन फिर भी पशु चिकित्सक सावधानी बरतने की सलाह दे रहे हैं। विशेषज्ञों की मानें तो बाजार से दूध खरीकर कम से कम 100 डिग्री सेंटीग्रेड तक गरम करना या उबालना चाहिए। दूध में मौजूद घातक बैक्टीरिया और वायरस को खत्म करने के लिये सिर्फ यही नुस्खा काफी है इसलिये लंपी संक्रमित गाय-भैंसों का दूध पीने से पहले सावधानियों पर अमल करना फायदेमंद रहता है.

भूरी त्वचा रोग (Lumpy Skin Disease) पशुओं के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा है जो उत्पादकों, गाय पालकों और पशु स्वास्थ्य नियंत्रण अधिकारियों को सतर्क रहने की आवश्यकता है। इससे बचने के लिए, गर्मी के मौसम में पशुओं के आवास में वेक्टर कंट्रोल, नियंत्रण और संक्रमण प्रबंधन के लिए उपाय अपनाने की आवश्यकता होती है।

ISSN:2583-8288